श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति
राजस्थान का उद्‌बोधन

श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर का तृतीय दीक्षान्त समारोह

दिनांक 25 नवम्बर, 2020 **समय दोपहर : 12.30 बजे**

स्थान : राजभवन, जयपुर

आज के इस गरिमामय दीक्षान्त समारोह में उपस्थित पद्म भूषण डॉ. राजेन्द्र सिंह परोदा, अध्यक्ष ''टास'' एवं पूर्व महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद और सचिव कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग, भारत सरकार, मुख्य अतिथि डॉ. प्रेम लाल गौतम पूर्व कुलपति गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर, कुलपति प्रोफेसर जीत सिंह सन्धु, राजस्थान के अन्य कृषि विश्वविद्यालयों एवं पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय के कुलपतिगण, प्रबंध मण्डल व अकादमिक परिषद के सदस्यगण, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के अधिकारी एवं वैज्ञानिक, समस्त अधिष्ठाता, निदेशक, संकाय सदस्य, सम्मानीय अतिथिगण, कुलपति पदक व उपाधि प्राप्त करने वाले छात्र–छात्राएं और उनके अभिभावकगण, भाइयो और बहिनों।

ढूंढाड़ अंचल का प्राचीन कस्बा जोबनेर ज्वाला माता का पावन शक्तिपीठ है। इस स्थान की अपनी गौरवमयी संस्कृति और इतिहास है। यह बेहद महत्वपूर्ण है कि 1947 में यहां रावल नरेन्द्र सिंह ने देश में सबसे पहले कृषि महाविद्यालय की स्थापना की। पहले यह

महाविद्यालय राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय (वर्तमान में स्वामी केशवानन्द कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर) के अधीन था। सुखद है कि जोबनेर की पावन धरा पर अब वही महाविद्यालय श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय के रूप में कार्य कर रहा है। इस विश्वविद्यालय के तृतीय दीक्षांत समारोह में ऑनलाइन सम्मिलित होकर मुझे अत्यधिक प्रसन्नता है।

भारतीय संस्कृति में दीक्षान्त शब्द अत्यन्त महत्वपूर्ण है। दीक्षान्त का अर्थ होता है दीक्षा की समाप्ति। तैत्तिरीय उपनिषद में दीक्षान्त का व्यापक उल्लेख है। जीवन के जो 16 संस्कार हमारे यहां है, उनमें यह दीक्षान्त भी है।

सनातन भारतीय संस्कृति के मूल्यों में मेरा गहरा विश्वास है। यज्ञोपवीत के उपरान्त सनातन संस्कृति में बालक को किसी न किसी गुरूकुल में पढ़ने के लिए भेजा जाता रहा है। शिक्षा के समापन पर बालक को आचार्य जो उपदेश देता था वही दीक्षान्त उपदेश होता था।

इसलिए दीक्षान्त का अर्थ है, सीखी गई शिक्षा का समापन। एक तरह से दीक्षांत नई शुरूआत है। विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने के बाद जीवन जीने की नई शुरूआत ही तो करता है! यह वह शुरूआत है जब सीखे गये ज्ञान की व्यावहारिक परीक्षा प्रारंभ होती है। यानी जो कुछ विद्यार्थी ने शिक्षण संस्थान में ज्ञान प्राप्त किया है, उससे इतर जीवन से जुड़े व्यवहारों को अब उसे सीखना है।

देश में जो नई शिक्षा नीति बनी है, वह प्राचीन भारतीय संस्कृति के जीवन मूल्यों से जुड़ी हुई है। यह बात मैं इसलिए कह रहा हूं कि उसमें पुस्तकीय ज्ञान के साथ ही विद्यार्थियों को स्कूल और उच्च शिक्षा में व्यावसायिक, जीवन कौशल शिक्षा के पाठ्यक्रमों से दीक्षित किए जाने पर जोर है।

नई शिक्षा नीति को राजस्थान में लागू किए जाने के संबंध में विश्वविद्यालयों से तीन दिन ऑनलाइन जो संवाद हुआ, उसमें मैंने इसी बात पर विशेष जोर दिया था कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 की मंशा को पूरी तरह से समझते हुए विश्वविद्यालय इसे अपने यहां लागू करे।

मुझे खुशी है कि बहुत से विश्वविद्यालयों ने अपने शिक्षण पाठ्यक्रमों में आमूलचूल परिवर्तन करते हुए व्यावसायिक व रोजगारोन्मुखी शिक्षा के नए कोर्स विकसित करने की पहल अपने यहां की है।

प्राचीन समय में गुरूकुल में जो शिक्षा दी जाती थी वह पुस्तकीय तो होती ही थी, व्यावहारिक भी होती थी। शास्त्रों के ज्ञान के साथ विद्यार्थियों को खेती, पशुपालन, शस्त्र–संचालन तथा समाज व राजनीति की व्यावहारिक शिक्षा भी दी जाती थी। आश्रम और गुरुकुल से शिक्षित छात्र अपनी योग्यता और क्षमता के अनुसार बाद में फिर देश, धर्म, समाज और अपने परिवार की सेवा करते थे।

आज के इस दीक्षान्त समारोह में मैं छात्रों और उनके माता–पिता को उनकी शैक्षणिक उपलब्धियों के लिए बधाई देता हूं। साथ ही उम्मीद करता हूं कि विद्यार्थियों ने जो शिक्षा प्राप्त की है, उसका देश, समाज की बेहतरी के लिए उपयोग करेंगे।

प्रदेश में कृषि शिक्षा, अनुसंधान और प्रसार को बढावा देने में आपके इस विश्वविद्यालय का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। कृषि शिक्षा को ग्रामीण अंचल तक पहुँचाने के लिए विश्वविद्यालय के नौ संघटक व 11 संबद्ध कृषि महाविद्यालय महत्वपूर्ण हैं। अकादमिक वर्ष 2018–19 में कोटपूतली, बसेडी तथा किशनगढ़ बास तीन नए कृषि महाविद्यालय शुरू किए हैं। मुझे यह जानकर सुखद लग रहा है कि सभी महाविद्यालयों ने कोविड़–19 समय में ऑनलाईन पढ़ाई को समयबद्ध तथा सुचारू रूप से सम्पादित करने के साथ ही परीक्षाओं व उनके परिणामों को समय पर जारी करने में अग्रणी भूमिका निभाई है।

कोरोना महामारी से विश्व परिदृश्य में भारी बदलाव आया है। शिक्षा में डिजिटल तकनीक का तेजी से समावेश हुआ है। मुझे खुशी है कि कृषि विश्वविद्यालय के शिक्षकों ने कोरोना काल में छात्रों को ऑनलाइन शिक्षित किया जा रहा हैं। भविष्य में कृषि के क्षेत्र में डिजिटल तकनीक का समुचित उपयोग और अधिक बढेगा, इसलिए विश्वविद्यालय शिक्षकों को इन नई तकनीकों का उपयोग कर छात्रों को अधिक ज्ञानवान बनाने की ओर ध्यान देना होगा।

मुझे यह बताया गया है कि विश्वविद्यालय को इस वर्ष ICAR नई दिल्ली से विश्व बैंक पोषित राष्ट्रीय कृषि उच्चतर शिक्षा परियोजना में **23.89** करोड़ रूपये प्रदान किये हैं। मैं समझता हूं इससे आप अनुभवजन्य शिक्षा, रोजगार परक कौशल और उद्यमशीलता विकास पर विशेष ध्यान देंगे। जरूरी यह भी है कि कृषि उद्यमों में छात्रों की भागीदारी बढ़े ताकि वे रोजगार सृजक बन सके।

विश्वविद्यालय में भारत सरकार के आर्थिक सहयोग से स्थापित एग्री–बिजनेस इन्क्यूबेशन सेंटर पर नवाचारी विचारों को परिष्कृत करके उन्हें मूल्य संवर्द्धित अभिनव उत्पाद बनाने का प्रशिक्षण व अनुदान देने का कार्य महत्वपूर्ण है। मेरा यह मानना है कि यह केन्द्र नेटवर्किंग और कृषि आधारित स्टार्टअप स्थापित करने के लिए युवाओं को अनुकूल वातावरण तो प्रदान करे ही प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से किसानों को अपने मार्गदर्शन के जरिए उनकी आय बढ़ाने के लिए भी कार्य करे।

हम सभी यह जानते हैं कि कृषि को आकर्षक एवं रोजगारोन्मुखी बनाने में युवा स्नातकों एवं ग्रामीण युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। मेरे लिए यह जानना प्रसन्नता का विषय है कि ग्रामीण युवाओं को मुख्य धारा में लाने के लिए विश्वविद्यालय में ''स्टूडेन्ट रेडी'' कार्यक्रम लागू कर उनकी कर्मशीलता को बढावा देने के लिए प्रयास किये जा रहे हैं। यह भी सुखद है कि इसी वर्ष ''नार्म'' हैदराबाद द्वारा इस विश्वविद्यालय में एक करियर विकास केन्द्र (CDC) की स्थापना की गई है जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास तथा उन्हें स्वरोजगार की ओर मोड़ने में महती भूमिका निभायेगा।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए यह जरूरी है कि विश्वविद्यालय अपने पाठ्यक्रमों को नई शिक्षा नीति की मंशा को समझते हुए अद्यतन करते हुए उसमें ज्ञान विज्ञान एवं तकनीकी के नए आयामों को सम्मिलित करे। यह जानना सुखद है कि विश्वविद्यालय में शिक्षा और अनुसंधान की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए चौदह से भी अधिक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं से एमओयू किया गया है। इससे विद्यार्थी अन्य संस्थाओं के इच्छित शोध विशेषज्ञों के निर्देशन में शोध कर सकेंगे। देश के

संसाधनों के बेहतर उपयोग की दृष्टि से इसे मैं महत्वपूर्ण मानता हूं।

राष्ट्र के कल्याण हेतु विश्वविद्यालय को शोध एवं अनुसंधान पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। कृषि विकास में कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। मुझे बताया गया है कि इस विश्वविद्यालय के वैज्ञानिको द्वारा विभिन्न फसलों की 150 से भी अधिक उन्नत प्रजातियों एवं चार सौ से भी अधिक कृषि तकनीकें विकसित की गई हैं। किसानों द्वारा उन्नत तरीके से फसलोत्पादन व कीड़े–बीमारियों से बचाव या नियंत्रण हेतु यह तकनीकें उपयोग में लाई जा रही हैं। इसी वर्ष बाजरे की दो जैव दृढ़ (बायोफोर्टिफाइड) किस्में भी इस विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई हैं जिनमें आयरन व जिंक की मात्रा वर्तमान किस्मों से अधिक है। विश्वविद्यालय को अन्य फसलों में भी इसी प्रकार की जैव दृढ़ किस्में विकसित करनी होंगी ताकि कुपोषण से छुटकारा मिल सके व कोरोना जैसी महामारी के प्रति लोगो में प्रतिरोधक क्षमता बढ सके।

मेरा यह मानना है कि खेत में जो किसान काम करते हैं, **वह भी कृषि वैज्ञानिक हैं। उनके अनुभव आधारित ज्ञान का लाभ कृषि विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को उनके पास जाकर लेना चाहिए।**

मैंने यह देखा है कि बहुत से किसानों ने अपने अनुभव और परम्परा के ज्ञान से ऐसे ऐसे उन्नत बीज तैयार किए हैं जिनसे बेहतरीन फसलें मिल सकती है। ऐसे औजार अपने स्तर पर ईजाद किये हैं जिनको वैज्ञानिक ढंग से परिस्कृत करके खेतों के लिए बहुत उपयोगी यंत्र तैयार किए जा सकते हैं। किसानों के परम्परागत और अनुभव आधारित ज्ञान का कृषि विकास में सुनियोजित उपयोग किया जाए तो उसके बहुत बेहतर परिणाम कृषि क्षेत्र को मिल सकते हैं। इसलिए मेरा यह भी आपसे अनुरोध है कि विश्वविद्यालय ऐसे पाठ्यक्रम बनाए जो किसानों के अनुभव आधारित पारम्परिक ज्ञान पर आधारित हो। किसानों से संवाद से इस तरह के पाठ्यक्रम निर्माण में मदद मिल सकती है।

किसानों के लिए उच्च गुणवत्ता वाले बीजों की प्रायः कमी बनी रहती है। अच्छे बीजों की उपलब्धता हम सभी के लिए चुनौती है। इसके लिए संस्थागत प्रयास आवश्यक है। मुझे ये जानकर प्रसन्नता है कि इस वर्ष विश्वविद्यालय के विभिन्न केन्द्रों पर किसानों को शुद्ध व गुणवत्तायुक्त बीज उपलब्ध कराने के लिए 6 नए बीज विधायन संयंत्र स्थापित किये गए हैं और विश्वविद्यालय द्वारा सब्जियों तथा नकदी फसलों के बीज उत्पादन का कार्य शुरू कर दिया गया है।

फसलों की पैदावार बढ़ाने और खेती के तरीकों को सुगम व लाभदायक बनाने के लिए आधुनिकतम तकनीकों और सेवाओं का इस्तेमाल जरूरी है। किसान अब खेती से जुडी समस्याओं से निपटने, नई कृषि विधियां सीखने और दुनिया भर में हो रहे कृषि प्रयोगों के बारे में जानने के लिए स्मार्ट फोन के माध्यम से फेसबुक, व्हाटसअप, यूट्यूब जैसे साधनों से जुड़ रहे हैं। खेती को बेहतर बनाने में सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़े ये साधन प्लेटफार्म का काम कर रहे हैं।

भारत में आज भी ज्यादातर खेती मौसम के हालात पर टिकी है। खेती में इसी से जोखिम अधिक है, लेकिन किसान घर बैठे मौसम के पूर्वानुमान और कृषि वैज्ञानिकों द्वारा बताए तरीकों से खेती की जोखिम से निपट सकते हैं। इन जानकारियों को कृषक वर्ग तक पहुंचाने में हमारे कृषि विज्ञान केन्द्र सतत् क्रियाशील हैं, लेकिन फिर भी कृषि विज्ञान केन्द्रों के कार्यों को और अधिक गति देने की आवश्यकता है।

आज खेती की लागत में निरन्तर वृद्धि हो रही है लेकिन कृषि में मशीनीकरण की पहुँच अभी बहुत कम है। क्षेत्र, फसल एवं जोत के आधार पर मशीनों व उपकरणों के उपयोग से इस उत्पादन लागत को कम किया जा सकता है। कस्टम हायरिंग केन्द्र, मशीन रिपेयरिंग तथा मशीन कौशल विकास के कार्यों की पहुँच गांवों तक पहुँचाकर किसानो को लाभ पहुँचाने की आवश्यकता है। विकसित देशों में ड्रोन तकनीक का उपयोग खेती में होने लगा है। मेरा अनुरोध है कि प्रदेश के किसानो को इस तकनीक की जानकारी उपलब्ध कराने हेतु यह विश्वविद्यालय भी अग्रणी भूमिका निभाए।

पर्यावरण संरक्षण वर्तमान समय की सबसे बड़ी जरूरत है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि सघन वृक्षारोपण कार्यक्रम के अन्तर्गत विश्वविद्यालय व इसकी विभिन्न इकाईयों में लगभग 15,000 वृक्ष लगाये गये हैं और इनकी समुचित देखभाल भी की जा रही है। विश्वविद्यालय में प्लास्टिक व तम्बाकू उपयोग पर रोक के साथ ही पर्यावरण संरक्षण के जरिए इसे ग्रीन कैम्पस बनाने का सतत् प्रयास सराहनीय है।

यह जानना भी सुखद है कि आत्म निर्भरता की ओर बढ़ते हुए अपशिष्ट पदार्थों से कम्पोस्ट खाद बनाने, 10 करोड़ लीटर की क्षमता के नौ तालाब और 364 के. वी. क्षमता के सौर ऊर्जा प्लान्ट विश्वविद्यालय में लगाये गये हैं। मैं यह मानता हूं कि इस नई पहल से इस कृषि विश्वविद्यालय को एक नई पहचान मिलेगी।

विश्वविद्यालयों में प्रवेश से लेकर पदक एवं पदवी वितरण तक समयबद्धता का कठोरता से पालन करना आवश्यक है। उपाधियां प्राप्त करने वाले छात्र–छात्राओं से मैं अपेक्षा करता हूँ कि आप राष्ट्र निर्माण में अपनी सकारात्मक, संरचनात्मक एवं सक्रिय भूमिका निभाने के

लिए तैयार हों। शिक्षित युवाओं को उभरते हुए नव भारत के निर्माण में प्रमुख भूमिका निभानी चाहिए।

शिक्षित होने का प्रमाण केवल डिग्री ही नहीं है, अपितु यह ज्ञान हमारे आचरण, व्यवहार व सोच में परिलिक्षित होना चाहिए। कोविड का यह समय बेहद चुनौतीपूर्ण है। इस समय में यहां से शिक्षित युवाओं का यह भी दायित्व बनता है कि वे **'सतर्क भारत समृद्ध भारत'** को व्यवहार में चरितार्थ करें।

यहां से शिक्षा प्राप्त कर जीवन की नई शुरूआत करने वाले विद्यार्थियों का मैं आह्वान करता हूं कि वे सीखे गये ज्ञान का उपयोग राष्ट्र के विकास में लगाएं। कृषि क्षेत्र में उनकी शिक्षा का सभी स्तरों पर लाभ मिलेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि डॉ. राजेन्द्र सिंह परोदा जो कि **''ट्रस्ट फॉर एडवांसमेंट ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेज''** की स्थापना से आदिनांक अध्यक्ष हैं, को कृषि के क्षेत्र में उनके योगदान के लिये **''डॉक्टर ऑफ साइंस''** की उपाधि प्रदान की गयी है।

भारतीय एवं विदेशी विश्वविद्यालयों की सूची में आज श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय का नाम भी जुड़ गया है। और भी खुशी की बात यह है कि डॉ. परोदा ने अल्प समय के लिये अपने प्रोफैशनल करियर की शुरूआत जोबनेर से ही की थी।

आज के दीक्षान्त अतिथि डॉ. प्रेम लाल गौतम अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक हैं। पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार में अध्यक्ष रहने के साथ ही आप गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर के कुलपति रहे हैं। आपके ओजपूर्ण दीक्षान्त भाषण से हमारे स्नातक व स्नातकोत्तर उपाधि धारक लाभान्वित होकर कर्म पथ पर सफल साबित होंगे, ऐसा विश्वास है।

मैं इस गरिमामय दीक्षांत समारोह के लिए आप सभी को बधाई देते हुए आज डिग्री प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थियों को हृदय से उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं देता हूं।

धन्यवाद। जय हिन्द।